Indian J. Soc. & Pol. 08 (02) : 99-100 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

कोलनताई का नारी विषयक चिंतन

संजय शर्मा[1], अजय सिंह[2]
[1]पूर्व शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0, भारत
[2]विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान, हंण्डिया पोस्टग्रेजुएट कालेज, प्रयागराज, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

रुसी कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी एलेक्जेन्ड्रा मिखालोनोवा कोलनताई (1872–1952) एक रेडिकल नारी चिंतक है। वह महिलाओं को घर के दमघोटू वातावरण से बाहर निकालकर शक्ति, अवसर व नवीन वातावरण प्रदान करने की बात करती है। वह यह बताने का यत्न करती है कि महिलाओं के सामाजिक उत्पीड़न की शुरुआत निजी सम्पत्ति के अस्तित्व में आने के साथ शुरु हुई। वह महिलाओं को समानता व अभिव्यक्ति के अधिकार प्रदान करते हुए जेंडर भेद को चुनौती देती है।

KEYWORDS: नारीवाद, रेडिकलिज्म, कोलनताई, जेडर विमर्श,

कोलनताई का जन्म सन् 1872 ई० को सेंट पीट्र्सवर्ग (रूस) में हुआ। इनका बचपन का नाम शूरा था। उनके विचारों को गढ़ने में बेबेल की पुस्तक 'वीमेन एंड सोशलिज्म' की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 1915 ई० में जिम्मरवाल्ड सम्मेलन में उन्होंने 'युद्ध किसे चाहिए?' नामक घोषणापत्र प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक 'द सोशल बेसिस ऑफ वीमेन क्वेश्चन 1909' में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के सामाजिक आधार पर ध्यान केन्द्रित किया। यौन स्वतन्त्रता से संबंधित उनके अन्य लेख है– लव एंड द न्यू मोरेलिटी (1911), सोशलिज्म एंड फेमिली (1920), सेक्सुअल रिलेशन एंड द क्लास स्ट्रगल (1921), थिसिस ऑन कम्युनिस्ट मोरेलिटी इन द स्फेयर ऑफ मेरिटल रिलेशन (1921) व मेक वे फार विंग्ड एरोज (1923)। हरेक चिंतक की भाँति वह भी अपने काल की परिस्थितियों से प्रभावित है। कोलनताई ने रूस की अस्थिरता देखा, कठोर व अनुचित प्रतिबंधों के साथ राजनीतिक संस्थाओं को बेबस देखा तब उन्होंने अन्याय व असमानता का विरोध करने का निर्णय लिया। शिक्षा व परिवर्तन पर जोर देते हुए स्वतन्त्रता की बात की। महिला जीवन में समानता स्थापित करने की ठानी। '1906 से 1908 के दौरान –– उन्होंने बुर्जुआ नारीवाद के विरुद्ध आन्दोलन, नियोक्ताओं के विरुद्ध आन्दोलन, अपने स्वयं के हितों की रक्षा के लिए रुसी महिलाओं और महिला श्रमिकों को संगठित करना, रुढ़िवादी विचारधारा के विरुद्ध आन्दोलन समाजवादी संगठनों के पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध आन्दोलन, हड़ताल, विरोध प्रदर्शन, जन आन्दोलन इत्यादि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। (परमार, 2019 पृ. 142)

रूसी समाजवादी आन्दोलन की चर्चित हस्ती कोलनताई ने महिलाओं के लिए मार्क्सवादी प्रतिमानों में बदलाव किया। अपने रेडिकल विचारों को निर्भीकता से रखते हुए महिलाओं को संबोधित करते हुए वह कहती हैं ' वह एक नई आजादी के लिए सक्षम और बेमिसाल है। शादी के लिए, बच्चों के लिए, धर्म के लिए दास मत बनो। अपनी सभी जंजीरों या पुराने संबंधो को तोड़ दो। यह राज्य, यह देश ही तुम्हारा घर है। हम महिलाओं से पूरे दिन रसोई में परिश्रम करते रहने की उम्मीद नहीं कर सकते। रूस में सामुदायिक रेस्तरां, सामूहिक भोजनालय, सामूहिक कपड़े धोने की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे महिलाओं को समय मिले और वे समय पाकर पढ़ाई–लिखाई, मनोरंजन और रचनात्मक कार्य में योगदान दे सकें। घरेलू बंधनों से मुक्ति देकर ही हम महिलाओं को एक खुशहाल समृद्धि युक्त व जीवन जीने के अवसर प्रदान कर सकेंगे।..... महिलाओं के सामाजिक उत्पीड़न की शुरुआत निजी सम्पत्ति के साथ हुई है। (एने ब्रूफ, 1979, पृ 50)

कोलनताई ने 'द सोशल बेसिस' में वैवाहिक संबंधों में आजादी व चुनाव की स्वतन्त्रता, आर्थिक स्वतन्त्रता, परिवार, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं की समस्या और उपायों की बात करती है। उनका मानना है कि समाज में महिलाएँ हरेक स्तर पर अपनी मुक्ति और समस्या का समाधान खोज रहीं हैं। इन स्तरों पर महिलाओं के भीतर अधिकारों को लेकर मतभेद पैदा हो रहे हैं। यह मतभेद 'वर्ग के सवाल' से पैदा हो रहा है। बुर्जुआ वर्ग की स्थिति को देखे तो वहाँ पुरुषों के पास महिलाओं से ज्यादा अधिकार है। वहाँ महिलाएँ पुरुषों को अपना दुश्मन मानती है। यह बात सर्वहारा वर्ग पर लागू नहीं होती हैं। यहाँ स्त्री–पुरुष दोनों अन्याय, अत्याचार व शोषण का शिकार है। सर्वहारा महिलाएँ सर्वहारा पुरुषों को अपना दुश्मन नहीं समझती बल्कि उस समाज व्यवस्था को दोषी मानती हैं जिसने उन पर कठोर नियंत्रण स्थापित कर रखा है। सेक्स/जेंडर संबंधों को समझाते हुए वह इसके मूल में सामाजिक व आर्थिक संघर्षों को मानती है। वह बताती है कि महिलाओं के अधिकार राजनीतिक परिवर्तन से हासिल नहीं होगें बल्कि इसके लिए नई सामाजिक संरचनाओं को निर्मित करना होगा। वह 'मुक्त प्यार' की बात करते हुए बताती है कि वैवाहिक संबधों में 'प्रेम' पारस्परिक निर्भरता हो सकता है न कि अर्थ। उनका कहना है, 'महिलाओं को विवाह के लिए चुनाव की आजादी होनी चाहिए और यदि वे विवाह के विरुद्ध फैसला करती हैं तो उसके बाद मुक्त प्यार का विचार उनके लिए खुला होना चाहिए। साथ ही यह प्रश्न भी है कि कैसे एक सर्वहारा वर्ग की महिला को पूंजीपति समाज मुक्त प्यार करने का अवसर दे सकता है। (कोलनताई, 1977 पृ 201–292)

कोलनताई का कहना है कि सर्वहारा वर्ग की महिलाएँ काम करते हुए, बच्चों का पालन–पोषण करते हुए इतना थक जाती है कि उनके पास मुक्त प्रेम के लिए समय ही नहीं मिलता।

1: Corresponding Author

बुर्जुआ महिलाओं के प्यार व आनंद के लिए समय की कोई कमी नहीं है। सर्वहारा वर्ग की महिलाएँ पैसे की कमी से जूझती है जबकि बुर्जुआ महिलाओं के पास पैसे की कमी नहीं। प्रेम की धारा दोनों में बहती है लेकिन तिरस्कृत सर्वहारा वर्ग की महिला होती हैं। वह यह भी कहती है कि नारीवादी बुर्जुआ महिलाओं के प्रेम प्रसंगों, सहवास को अति उत्साह से उल्लिखित करती है, वही जब सर्वहारा वर्ग के महिलाओं की बात होती है तो उसको उच्छृंखल संभोग समझा जाता है। इससे उनकी दृष्टि का पता लगता है।

कोलनताई बुर्जुआ व सर्वहारा वर्ग की महिलाओं के प्रेम से जुड़ी अभिव्यक्तियों पर प्रकाश डालती है। (वही, पृ 277) सर्वहारा वर्ग की महिलाओं के प्रेम को वह पंखवाले एरोज़ और बुर्जुआ महिलाओं के प्रेम को पंखहीन एरोज कहती है। पंखहीन एरोज़ को वह स्वार्थी व आत्मपरक बताती है, वहीं पंखवाले एरोज़ को आंतरिक शक्ति व गुणवत्ता से युक्त मानती है। वह सर्वहारा वर्ग की इस गुणवत्ता व नैतिकता में तीन बातें देखती है– रिश्तों में समानता, अधिकारों की पारस्परिक मान्यता व कामरेड़ संवेदनशीलता। (परमार, 2019 पृ 152) शुभ्रा परमार द सोशल बेसिस के मुख्य प्रतिपाद्य के बारे में कहती हैं कि इसमें चार विषयों पर गहनता से विचार किया गया है– आर्थिक स्वतन्त्रता, विवाह और परिवार, गर्भवती महिलाओं की देखभाल और महिलाओं के राजनीतिक अधिकार (वही, पृ 165) जिनी लोकनीता कहती हैं कि 'कोलनताई व्यस्कों के बीच प्रेम की बात तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों के आधार पर करती है– आपसी रिश्तों में समानता, एक दूसरे के बीच अधिकारों की पारस्परिक मान्यता, सहयोगियों के प्रति सांप्रदायिक संवेदनशीलता। (लोकनीता, 2001 पृ 1405–1412)

कोलनताई ने सोवियत संघ में महिलाओं के जीवन में बदलाव लाने के लिए मार्क्सवादी विचारधारा को समझते हुए समाजवादी नारीवादी चिंतन दिया। वह कहती है कि 'परिवर्तन के लिए क्रान्ति अपरिहार्य है और क्रान्ति मानव संबंधों में मौलिक रुप से परिवर्तन करती है।' (रामास्वामी, 2018 पृ 282) बोल्शेविक नारीवाद को आगे बढ़ाने में उनका सहयोग कोन्कोडिया निकोलवना समोइलोवा, इनेन्सा आर्मंड, नेदेज्ज़ा कृपस्काया लेनिन ने किया। इन तीनों महिलाओं ने कोलनताई के लिए बेहतर आर्थिक वेतन दिलाने के लिए कार्य किया। (ब्रायसन, 1992 पृ118) कैथी पोर्टर का कहना है कि, 'कोलनताई विशेष रुप से, समाजवाद को महिलाओं और बच्चों की जरुरत के लिए उत्तरदायी बनाने के लिए श्रमिक राज्यों हेतु एक नई कम्युनिस्ट यौन नैतिकता बनाने की बात करती है। (पोर्टर, 1980) वह यह भी मानते है कि समाजवादी नारी आन्दोलन व रुसी क्रान्तिकारी महिलाएँ उनके सैद्धान्तिक व व्यवहारिक कार्यो को कभी भुला नहीं पायेगी।

कोलनताई नई शक्ति, अवसर व नए परिवेश निर्मित करने की बात करती है। शादी की बाधाओं के बगैर यौन संबंध बनाने की बात करती है। वैवाहिक संबंधों में सुधार चाहती है। वह बुर्जुआ व सर्वहारा वर्ग की महिलाओं के प्रेम को अलग–अलग रुपों में देखती है। सर्वहारा वर्ग की महिलाओं के प्रेम को निश्चल बताती है। रूसी इतिहास में वह एक प्रसिद्ध व लोकप्रिय महिला है। वह रूसी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी।

REFERENCES

ब्रायसन, बेलेरी. (1992). *मार्क्सिसिस्ट फेमिनिज्म इन रसिया इन फेमिनिस्ट पोलिटिकल थ्यौरी,* लंदन, मैकमिलन पब्लिशर्ज

ब्रूफ, ऐने (1979). एलेक्जेड्रा कोलनताई फेमिनिज्म, वर्कर्स डेमोक्रेसी एंड इंटरनेशनलिज्म, *रेडिकल अमेरिका,* वोल्यूम. **13**, नं० **6.**

कोलनताई, ए., (1977). *मैक वे फार विग्ंड एरोजः ए लेटर टू द यूथ, इन सलेक्टेड राइटिंग ऑफ एलेक्जेंड्रा कोलनताई, एलीसन एंड बुसवई.*

परमार, शुभ्रा (2019). *आधुनिक राजनीतिक दर्शन,* हैदराबाद, ओरियंट ब्लैक स्वॉन.

पार्टर, कैथी (1980). *एलेक्जेड्रा कोलनताईः द लोनली स्ट्रगल ऑफ द वूमेन हूँ डिफाईड लेनिन*, न्यूयार्क, डट्न चिल्ड्रेन बुक

रामास्वामी, सुशीला (2018). *वूमेन इन पोलिटिकल थॉट,* नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वॉन, ग्लोरियस प्रिटर्स

लोकनीता, जिनी (2001). एलेक्जेंड्रा कोलनताई एंड मार्क्सिसिस्ट फेमिनिज्म, *इकोनामी एंड पोलिटिकल वीकली*, वाल्यूम. **36,** नं० **17.**